भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 3 | **दिसम्बर** 2002 | **अंक** 12

चौधरी बदरीनारायण उपाध्याय 'प्रेमघन' की रईसी

प्रेमघनजी भारतेन्दु मण्डल के प्रतिष्ठित लेखक थे। कवि, नाटककार, गद्यकार, आलोचक, पत्रकार इनके विविध रूप थे। पं० बालकृष्ण भट्ट तथा प्रेमधनजी ने हिन्दी आलोचना का सूत्रपात किया था। 19वीं 20वीं शताब्दी के संधिकाल में भारतेन्दु की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' के प्रमुख रचनाकार थे।

प्रेमघनजी भारतेन्दुजी से वय में 5 वर्ष छोटे थे। भारतेन्दुजी और प्रेमघनजी अभिन्न मित्र थे। प्रेमघनजी भारतेन्दुजी से आर्थिक दृष्टि में बहुत सम्पन्न थे। वे रईसी के लिए विख्यात थे।

प्रेमघनजी मीरजापुर में रहते थे। रामचन्द्र शुक्ल भी मीरजापुर के निवासी थे। शुक्लजी शिष्य भाव से उनके यहाँ जाते थे। उन दिनों बिजली का प्रचार-प्रसार नहीं हुआ था। रईसों के यहाँ कीमती और सुन्दर मिट्टी के तेलवाले टेबुल लैम्प रोशनी के लिए रखे जाते थे। प्रेमघनजी की बैठक में उनके सामने ऐसा ही एक सुन्दर लैम्प रखा था। संध्या का समय था लैम्प की रोशनी हो रही थी। सहसा हवा के झोंके से लैम्प भभक उठा। लगा लैम्प की चिमनी टूट जायगी। शुक्लजी ने उसे बुझाना चाहा किन्तु प्रेमघनजी ने उनका हाथ दबाया और नौकरों को आवाज दी ''अरे सारे जन लम्प टूट जइहै तबै अइबो''। नौकर के आते-आते चिमनी टूट गई, किन्तु रईस प्रेमघनजी ने उसे बन्द न किया न करने दिया। ऐसी थी उनकी रईसी, शायद भारतेन्दुजी की रईसी का प्रभाव था।

उदीयमान, उड्डीयमान, गुड्डीयमान, कट गये

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सत्यनारायण अतिथि भवन, संध्या का समय, पंडित माखनलाल चतुर्वेदी अतिथि। उनसे मिलने आये—पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी भैय्या साहब, पं० उदयनारायण तिवारी, डॉ० जगदीश गुप्त, एक-दो अन्य साहित्यकार नाम स्मरण नहीं तथा मैं स्वयं।

साहित्यिक चर्चा होने लगी। बात चली कवियों पर। भैय्या साहब ने कहा—मेरे पास कितने कवि अपनी कविता पुस्तक लेकर आते हैं, कहते हैं भैय्या साहब इसकी भूमिका लिख दीजिए। मैं उनसे पूछता हूँ—यह बताओ क्या लिखूँ—''उदीयमान, उड्डीयमान, गुड्डीयमान या कट गये'' एक कवि महोदय भूमिका लिखवाने के उद्देश्य से आये थे। वे चुपचाप पलायित हुए। **— पुरुषोत्तमदास मोदी**

उच्च शिक्षा का भविष्य

स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रथम डेढ़ दो दशक में जिस गति से देश में सार्वजनिक उपक्रम स्थापित हुए, उनका विकास हुआ, अनेक निजी संस्थानों का राष्ट्रीयकरण किया गया, उतनी ही गति से विगत दो-ढाई दशकों में उनका पतन भी होता गया। परिणाम यह है कि उन सार्वजनिक तथा राष्ट्रीयकृत उपक्रमों का विनिवेश कर निजी क्षेत्र को दिया जा रहा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी खूब विकास हुआ, अनेक विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थान खुले। आज वे भी समस्या बन गये हैं। शिक्षा निजी क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही है, विश्वविद्यालयों की हालत खराब है, वे शासन के लिए समस्या बन गये हैं।

जिस प्रकार सार्वजनिक उपक्रमों के कामकाज में तेजी से गिरावट आई उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में सार्वजनिक शिक्षण संस्थाओं का तेजी से पतन शुरू हो गया। सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली ध्वस्त हो रही है जिसके लिए ठेकेदारी व्यवस्था की तैयारी हो रही है।

यह गिरावट उन संस्थाओं से अधिक राजनीतिक चरित्र के गिरावट की द्योतक है। आज हर क्षेत्र में राजनीति व्याप्त है, धर्म हो, समाज हो, उद्योग हो, व्यापार हो, कला संस्कृति हो राजनीति से प्रभावित सभी दुर्दशाग्रस्त हैं।

किसी समय राजकीय विद्यालय-महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त करना गौरव की बात थी, किन्तु अब स्थिति विपरीत है। शिक्षा पूर्णत: व्यावसायिक हो गई है। कोचिंग शिक्षण केन्द्र खुल गये हैं। रोजगारपरक शिक्षा के लिए कम्प्यूटर सूचना आदि के प्रशिक्षण केन्द्र खुलते ही जा रहे हैं।

दूसरी ओर विश्वविद्यालयों की हालत निरन्तर बिगड़ती जा रही है, वे राजनीति के केन्द्र बन गये हैं। भिन्न-भिन्न राजनीतिक दलों ने विश्वविद्यालयों के छात्रों और अध्यापकों को अपनी राजनीति का ऊर्जा-केन्द्र बना लिया है। आधा सत्र छात्रसंघ चुनाव, आन्दोलन, प्रदर्शन में बीत जाता है। अध्यापक भी उदासीन हैं, कितने अध्यापक मुश्किल से महीने में पाँच-सात कक्षाएँ पढ़ाते हैं, बाकी समय राजनीति में लगे रहते हैं।

सार्वजनिक उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत संस्थानों की भी यही दशा हुई। राजनीतिक पदाधिकारियों ने उन्हें अपनी राजनीतिक सत्ता का माध्यम बना लिया और धीरे-धीरे वे भी शासन के गले के पत्थर बन गये। कोई भी व्यावसायिक या उत्पादन यदि राजनीति का माध्यम बनेगा तो उसका पतन निश्चित है। आज सार्वजनिक तथा राष्ट्रीयकृत कितने ही उपक्रम बन्द पड़े हैं, कर्मचारियों को वेतन देना पड़ रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में शासन ने सुधार हेतु अध्यापकों के लिए उच्च वेतनमान निर्धारित किये। अध्यापकों की पदोन्नति को सरल बनाया। एक लेक्चरर 13 वर्ष बाद रीडर और 8 वर्ष बाद प्रोफेसर हो जाता है। आज एक-एक विभाग में दर्जन भर रीडर और प्रोफेसर मिल जायँगे। उन्होंने अपने कार्यकाल में क्या शोध कार्य किया, क्या लेखन किया, अपने विषय के नवीनतम ग्रन्थों का अध्ययन किया। छात्रों को उनके अध्ययन का लाभ मिला। कितने अध्यापक हैं जो 10 वर्ष पूर्व जो पढ़ते-पढ़ाते थे आज भी वही पढ़ा रहे हैं। पदोन्नति का कितना सरल मार्ग है। सरकारी विभागों में एक क्लर्क अपने सेवाकाल के कुछ वर्षों में बढ़ता-बढ़ता असिस्टेंट व डिप्टी सेक्रेटरी बन जाता है, वैसे ही विश्वविद्यालयों में रीडर और प्रोफेसर बनते जा रहे हैं। प्रत्येक रीडर-प्रोफेसर एक-एक विधा का विशेषज्ञ होना चाहिए परन्तु कालदेवता सामान्यत: सभी पर थोक भाव में मेहरबान हो जाता है। इतना

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेषांश

ही नहीं परस्पर आदान-प्रदान से शिक्षक पद वंश परम्परागत और परिवारजन्य होता जा रहा है।

अब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को इस पद्धति में खामी नजर आ रही है और अध्यापकों की नियुक्ति अनुबंध पर करने की योजना तैयार हो रही है। कारण है—(1) अधिकांश शिक्षक काम करने से कतराते हैं, (2) शिक्षक सेवा की पूर्ण सुरक्षा के कारण उदासीन हो जाते हैं, (3) अन्य देशों में शैक्षिक कार्य, समयबद्ध समझौते के अन्तर्गत शिक्षक को नियुक्त कर, किया जाता है, जिसके परिणाम सर्वथा बेहतर और अनुकूल होते हैं।

भूमण्डलीकरण ने हमारी सोच में भी परिवर्तन कर दिया है। अन्तरर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता की दिशा में हम सोचने लगे हैं। हम मनुष्य को यंत्र बनाना चाहते हैं, उसे संवेदना-मुक्त देखना चाहते हैं। सूचनाओं के आदान-प्रदान के इस युग में हम आदान अधिक कर रहे हैं, प्रदान करने को जैसे कुछ है ही नहीं। इस देश ने कभी भी शिक्षा को भौतिक समृद्धि का साधनमात्र नहीं बनाया, उसे मानवीय चेतना, सर्जना और संवेदना का संवाहक माना है। आज शिक्षा को ही नहीं, देश को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और परिवारवाद से मुक्त करना होगा तभी, शिक्षा अपने उच्च शिखर का स्पर्श करेगी।

छात्रों के अनुपात में शिक्षकों की संख्या घटती जा रही है। 100 छात्रों की कक्षा से अध्यापकों को जूझना पड़ता है। काम के अभाव में कितने युवक विश्वविद्यालयों-महाविद्यालयों में प्रवेश लेकर समय काटते हैं। कितने युवक जिन्हें विश्वविद्यालयों में प्रवेश नहीं मिलता वे विश्वविद्यालय परिसर में चहल कदमी कर समय बिताते हैं। अध्यापकों के भी कितने पद रिक्त हैं। विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों को साधन सम्पन्न बनाये बिना शिक्षा का स्तर नहीं सुधारा जा सकता।

इधर वित्त मंत्रालय ने उच्च शिक्षा के शुल्क में 20 से 30 गुना वृद्धि करने की सिफारिश की है। आजादी के पूर्व जो शुल्क था, लगभग वही आज भी लिया जा रहा है। इसमें वृद्धि करनी ही थी तो धीरे-धीरे 10 से 5 प्रतिशत वृद्धि की जाती, अब एकदम से इतनी वृद्धि करने से छात्रों का उग्र आन्दोलन जारी हो जायगा। कितनी विडम्बना है कि प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में छात्र डिग्री लेकर निकल रहे हैं और वे काम की तलाश में भटक रहे हैं, ऐसी उद्देश्यविहीन शिक्षा को इतनी महँगी बनाकर क्या सरकार अपने उद्देश्य में सफल होगी।

शिक्षा के खोखलेपन का परिणाम है कि आज निजी क्षेत्र में रोजगारपरक शिक्षा संस्थान तेजी से खुल रहे हैं, जहाँ शिक्षकों की नियुक्ति निश्चित कार्यावधि के लिए की जाती है। कोचिंग शिक्षा संस्थान उनके सहारे चल रहे हैं। विश्वविद्यालय में अध्यापक होते हुए कोचिंग संस्थानों में समय देते हैं। अच्छे शिक्षकों की तलाश की जाती है। छात्र भारी शुल्क देकर भी उनमें अध्ययन करते हैं।

आज गाँव-गाँव में नेताओं को उपकृत करने के लिए स्ववित्तपोषक डिग्री कालेज खुल रहे हैं, उनकी क्या दशा है इस पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को विचार करना चाहिए। ये डिग्री देने के कारखाने हैं।

सरकार प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में सुधार करे, उस पर ध्यान दे, उसे राजनीति से मुक्त करे तभी उच्चशिक्षा में सुधार होगा। माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा तथा प्राथमिक शिक्षा की सेतु है। इस सेतु को इतना समर्थ बनाने की आवश्यकता है जिससे हर एक उच्च शिक्षा में अपना समय बरबाद न करे, उन्हें माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर रोजगारपरक अथवा कार्य निपुण योग्यता प्राप्त हो जाय। इसके लिए एक सुनियोजित पाठ्यक्रम तैयार करना होगा और अध्यापकों को उसके लिए प्रशिक्षित करना होगा।

माध्यमिक शिक्षा के उपरान्त युवक अपने काम में लग जायँ, उच्च शिक्षा के आकांक्षी युवकों को दूरवर्ती विश्वविद्यालय, मुक्त विश्वविद्यालय, पत्राचार द्वारा विश्वविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करना सुविधाजनक बनाना चाहिए। स्वाध्याय द्वारा अर्जित ज्ञान स्थायी और सार्थक होता है।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

उच्च शिक्षा के लिए नये तौर तरीके तैयार हों

आज शिक्षाविदों से देश में उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों की नयी पीढ़ी को समायोजित करने के लिए नये तौर-तरीके विकसित करने होंगे। उच्च शिक्षा मानव विकास का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है इसलिए शिक्षाविदों को विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या को समायोजित करने के लिए नये तौर-तरीकों को विकसित करना चाहिए। कालेजों में स्थान सीमित हैं इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि इसके लिए मौजूदा कालेजों में ही बहुसूत्रीय प्रणाली लागू की जा सकती है। सर्वशिक्षा अभियान आने वाले वर्षों में काफी महत्त्वपूर्ण साबित होगा और बड़ी संख्या में बच्चे और युवक माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा हासिल करेंगे। **— मुरलीमनोहर जोशी**

प्रतिष्ठित संस्थानों को बन्द करने की सिफारिश

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय ने शैक्षिक क्षेत्र में खर्च घटाने के लिए देश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों को बन्द करने की सिफारिश की है। साथ ही अपने क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाले कई संस्थानों को आपस में मिला देने का सुझाव दिया है। इन सिफारिशों के दायरे में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आईसीपी आर), भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर), भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान (आईसीएसएसआर) और केन्द्रीय अंग्रेजी व विदेशी भाषा संस्थान (सीआईईएफएल) जैसे ख्यातिप्राप्त संस्थान शामिल हैं। वित्त मंत्रालय की व्यय सुधार समिति की नौंवी रिपोर्ट में इन संस्थानों सहित कई अन्य संस्थानों को या तो बन्द कर देने की सलाह दी गई है या फिर इन संस्थानों से सरकार को अलग हो जाने को कहा गया है। केन्द्रीय अंग्रेजी व विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद के बारे में हाल ही में जारी इस रिपोर्ट में कहा गया है कि अब देश में अंग्रेजी का शिक्षण काफी बेहतर हो गया है इसलिए इस संस्थान को पहले की तरह मदद प्रदान किए जाने की कोई जरूरत नहीं है और इस संस्थान को दी जाने वाली वित्तीय सहायता धीरे-धीरे घटा कर इसके प्रबन्धन और वित्तीय मदद को किसी निजी क्षेत्र या राज्य सरकार को सौंप दिया जाना चाहिए। जबकि भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् के बारे में व्यय सुधार समिति ने कहा है कि इन संस्थानों का कार्यक्षेत्र बेहद सीमित है और इनका प्रभाव भी काफी कम है। इस रिपोर्ट में सरकार को इन संस्थानों की गतिविधियों से न सिर्फ दूर रहने की सलाह दी गई है बल्कि यह भी कहा गया है कि इन संस्थानों को या तो पूरी तरह से स्वायत्त कर दिया जाना चाहिए या फिर इन तीनों संस्थानों को एक साथ मिलाकर एक अलग परिषद् बनाई जानी चाहिए। इन सिफारिशों पर भारतीय दार्शनिक अनुसंधान संस्थान के अध्यक्ष किरीट जोशी ने कहा है कि यह रिपोर्ट बेहद अतार्किक है।

जिस देश का दिमाग विदेशी भाषा में सोचे और लिखे, उस देश को अगर संसार राष्ट्र नहीं समझता तो यह अन्याय करता है। **— प्रेमचंद**

पुरस्कार-सम्मान

ललिता देवी को सावित्री बाई फूले सम्मान

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में 26 नवम्बर को नई दिल्ली के ताल कटरो स्टेडियम में आयोजित 18वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में वाराणसी की **श्रीमती ललिता देवी यादव** को 'वीरांगना सावित्री बाई फूले सम्मान' से दिल्ली प्रदेश की श्रीमती शीला दीक्षित ने सम्मानित किया।

गालिब सम्मान

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के पूर्व अध्यक्ष **प्रो० सै० हनीफ अहमद नक़वी** का चयन प्रतिष्ठित 'गालिब सम्मान' के लिए किया गया है। श्री नक़वी को यह पुरस्कार उर्दू में शोध व आलोचना की उनकी सेवाओं के लिए दिया जा रहा है। यह पुरस्कार आगामी 20 दिसम्बर को अंतर्राष्ट्रीय गालिब सेमिनार के दौरान दिया जाएगा। पुरस्कार के रूप में स्मृति चिन्ह और 25,000 रुपये नगद दिये जाएंगे।

वेदरत्न पुरस्कार सात विद्वानों को

भारतीय विद्या भवन ने वेदरत्न पुरस्कारों के लिए देशभर से सात जाने-माने वेदशास्त्रियों का चयन किया है। गुरु गंगेश्वरानंद की स्मृति में दिए जाने वाले इस पुरस्कार में गुरु गंगेश्वरानंद की मूर्ति के साथ एक लाख रुपये की नगद राशि भी भेंट की जाती है। जिन विद्वानों का इस पुरस्कार के लिए चयन किया गया है उनमें बेंगलूर के गणपति एसपी गुडाभट्ट, राजमुदरी के रमेला सूर्यप्रकाश शास्त्री, नागपुर के पुरुषोत्तम प्रह्लाद, हरिद्वार के डॉ० रामनाथ वेदालंकार, कोलकाता के डॉ० सीतानाथ गोस्वामी, चिकमंगलूर के एलएस नरसिम्ह मूर्ति और पटना के विश्वनाथप्रसाद वर्मा शामिल हैं।

मैनेजर पांडे व शिवकुमार मिश्र को गोकुलचंद्र पुरस्कार

आचार्य रामचंद्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, वाराणसी की ओर से 10 नवम्बर 2002 को गोकुलचंद्र सभागार में आयोजित समारोह में **डॉ० शिवकुमार मिश्र** व **मैनेजर पांडे** को पुरस्कारस्वरूप स्मृति चिह्न व ग्यारह-ग्यारह हजार रुपये के चेक प्रदान किए। वर्ष 2002 के लिए चंद्रावती पुरस्कार भीष्म साहनी को देने की घोषणा की गई थी, लेकिन साहित्य अकादमी के समारोह में व्यस्त होने के कारण वे यहाँ नहीं पहुँच पाए।

महीप सिंह सम्मानित

इटावा हिन्दी सेवा निधि के दशम सारस्वत सम्मान समारोह में चिंतक व कथाशिल्पी **डॉ० महीप सिंह** समेत हिन्दी के विद्वानों को सम्मानित किया गया। डॉ० महीप सिंह को 'राष्ट्रीय जनवाणी सम्मान' तथा उ०प्र० विधानसभा के अध्यक्ष केशरीनाथ त्रिपाठी को 'सेठ गोविन्ददास शासन प्रशासन हिन्दी सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह

इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती द्वारा 20 अक्टूबर 2002 को आयोजित समारोह में सर्वोच्च कृति सम्मान 'साहित्य भारती' से **डॉ० रामप्रकाश** को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि श्री हो०वे० शेषाद्रि ने साहित्यकारों को राष्ट्रीय भावना जगाने वाले साहित्य की रचना करने का आह्वान किया। साहित्यकार डॉ० नरेन्द्र कोहली ने कहा कि साहित्यकार को क्षेत्रवाद, जातिवाद आदि की सीमाओं से ऊपर उठकर साहित्य का सृजन करना चाहिए।

दो युवा कवि पुरस्कृत

हिन्दी के युवा कवि **सुंदरचंद ठाकुर** और बंगला कवि **अनिश्चय चक्रवर्ती** को प्रथम परिषद युवा पुरस्कार 2002 के लिए चुना गया है। भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता ने हिन्दी और बंगला में युवा लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए यह वार्षिक पुरस्कार शुरू किया है। दोनों युवा रचनाकारों को 11 जनवरी 2003 को पुरस्कृत किया जायेगा।

सूर्यकुमार पाण्डेय को कवि कौस्तुभ सम्मान

लखनऊ की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'शब्द' ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति संकल्पनिष्ठा, सृजन शक्ति, संशोधन-दृष्टि, कविता कर्म अनुष्ठान प्रतिष्ठा एवं भाषा की दीर्घकालीन सेवा हेतु कवि **सूर्यकुमार पाण्डेय** को कवि कौस्तुभ अलंकरण प्रदान किया है।

समारोह में आकाशवाणी, लखनऊ के केन्द्र निदेशक डॉ० सतीश ग्रोवर ने यह अलंकरण मानपत्र, स्मृति चिह्न, शाल आदि भेंट कर कविवर श्री पाण्डेय का सम्मान किया।

तीर्थयात्रा के पैसे से पुरस्कार कोष

शिव की प्रिया काशी दानशीलता के लिए भी प्रसिद्ध है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के पुत्र गोकुलचंद्र शुक्ल की स्मृति में उनकी पत्नी चंद्रावती शुक्ल ने गोकुलचंद्र पुरस्कार की स्थापना के लिए तीर्थयात्रा का पैसा दान कर दिया। पुरस्कार के लिए स्थायी कोष की व्यवस्था के लिए एक लाख रुपया दो किस्तों में 1992-93 में शोध संस्थान को दान कर दिया। यह धन उन्हें अमेरिका में बसे अपने पुत्र से तीर्थयात्रा के लिए प्राप्त हुआ था। मृत्यु से पहले कुसुम चतुर्वेदी के अनुरोध पर चंद्रावती शुक्ल ने पुनः एक बार पुरस्कार की स्थापना के लिए 60 हजार रुपये स्थायी कोष में दान कर दिए। उन्हीं की स्मृति में इस वर्ष से शुरू किए गए चंद्रावती पुरस्कार के लिए भीष्म साहनी को चुना गया है।

शीघ्र प्रकाश्य

साधना और सिद्धि

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

योग भारतवर्ष की प्राचीनतम रहस्य-विद्या है। भारत ने ही विश्व को योग-विद्या का ज्ञान दिया है। इसका आधार कठोर साधना और तपस्या है। इससे ही प्रतिभा और ऋतम्भरा प्रज्ञा का विकास होता है। इस विद्या से ही अनन्त सिद्धियाँ और विभूतियाँ प्राप्त होती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में इस विद्या की आद्योपान्त विधि बतई गई है। इसमें सम्पूर्ण योगविद्या का संक्षिप्त विवेचन है।

यह ग्रन्थ 10 अध्यायों में विभक्त है। अध्याय-1 में योग के आठ अंगों का संक्षिप्त विवरण है। साथ ही ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग और हठयोग की रूपरेखा दी गई है। अध्याय-2 में शरीर-संस्थान के वर्णन में मस्तिष्क, हृदय, श्वसन-संस्थान, स्नायु-संस्थान, पाचन-संस्थान, अन्तःस्रावी ग्रन्थियों एवं सात चक्रों का वर्णन है। अध्याय-3 में अतिलाभप्रद 25 आसनों एवं नेति-धौति आदि षट्कर्मों की पूरी विधि दी गई है। अध्याय-4 में प्राणायाम, उसके भेद, बन्ध और मुद्राओं का विस्तृत विवेचन है। अध्याय-5 में प्रत्याहार और धारणा की विविध विधियों का रोचक विवेचन है। अध्याय-6 में जैन, बौद्ध एवं श्री अरविन्द की ध्यानविधि का समन्वय करते हुए विविध ध्यान-पद्धतियों का विवेचन है। अध्याय-7 में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार के कार्यों का वर्णन है। अध्याय-8 में कुण्डलिनी-जागरण और समाधि की विधियाँ दी गई हैं। अध्याय-9 में 155 दिव्य-ज्योतियों के दर्शन की विधि दी गई है। अध्याय-10 में 50 प्रमुख रोगों की चिकित्सा-विधि दी गई है।

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी वेदों के मूर्धन्य विद्वान् होने के साथ ही उच्चकोटि के साधक हैं। उन्होंने योग और आत्मसाक्षात्कार जैसे गूढ़ विषय को अति सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत कर जनहित का महान् कार्य किया है।

कृष्णायन

रामबदन राय

200.00

परायण विधि एवं श्याम शलाका उत्तरावली सहित दोहा, चौपाई एवं विविध छन्द शैलियों में सटीक, सचित्र प्रभु श्रीकृष्ण की सभी प्रमुख कथाएँ।

जब तक आपके पास राष्ट्रभाषा नहीं, आपका कोई राष्ट्र भी नहीं।

भाषा की एकता सांस्कृतिक एकता का प्रधान स्तम्भ है।

राजा की भाषा जीविका की कुंजी है।

प्रेमचंद

स्मृति-शेष

स्मृति शेष शिवमंगल सिंह 'सुमन'

'मैं नहीं आया तुम्हारे द्वार, पथ ही मुड़ गया' का गायक मृत्यु के द्वार नहीं गया, पथ ही मुड़ गया। बुधवार 27 नवम्बर, 2002 को अपने उज्जैन निवास में सुमनजी ने अन्तिम श्वांस ली। वे 87 वर्ष के थे, उनकी ओजपूर्ण रसमय वाणी युग-युगों तक याद आती रहेंगी।

सुमनजी काफी समय से अस्वस्थ थे। उनका जन्म नागपंचमी 5 अगस्त 1915 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के डूँगरपुर गाँव में हुआ था। उन्नाव प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकारों की जन्मस्थली रही है—रामविलास शर्मा, नंददुलारे वाजपेयी, सुमित्राकुमारी सिन्हा, प्रतापनारायण मिश्र उन्नाव की ही देन हैं। 1940 से 1946 के मध्य सुमनजी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शिष्य और शोधार्थी थे। 1946 में बी०ए० का विद्यार्थी मैं सुमनजी की कविता से प्रभावित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उनसे मिलने गया। रुइया छात्रावास में शिवदान सिंह चौहान भी उनके साथ रहते थे, युवा सुमन को पहली बार देखा, उसके बाद कई अवसर आये। 1981 से 1983 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष थे। भाषा संस्थान की बैठकों में उनसे मिलने का अवसर मिला। 1994 में बी०एच०यू० की कार्यकारिणी परिषद और कोर्ट के सदस्य थे, उस समय की उनकी मुस्कान भुलाई नहीं जा सकती। विश्वविद्यालय के हीरक जयन्ती के अवसर पर हुए कवि सम्मेलन में सुमनजी ही छाये हुए थे।

सुमनजी ने अध्यापक के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया। प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी के वे गुरू थे, 1940 से ही वे सुमनजी से परिचित थे। सुमनजी ने विक्टोरिया कालेज, ग्वालियर से अपना अध्यापकीय जीवन आरम्भ किया था। वहीं उन्होंने वाजपेयीजी को पढ़ाया था। नेहरूजी के भी वे आत्मीय थे। सुमनजी 1968 से 1978 तक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलपति थे। 1956-1961 तक भारतीय दूतावास, काठमाण्डू (नेपाल) के कल्चरल अटैची थे। सुमनजी मुख्यत: कवि थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—हिल्लोल (1939), जीवनगान (1941), प्रलय सृजन (1944), विश्वास बढ़ता गया (1955), पर आँखें नहीं भरी (1955), विंध्य हिमाचल (1966), मिट्टी की बारात। 1947 में उन्हें 'मिट्टी की बारात' के लिए सोवियट लैण्ड पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1993 में उन्हें मध्यप्रदेश के शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें साहित्य अकादमी और भारत भारती पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। 1973 में उन्हें भागलपुर विश्वविद्यालय ने और 1983 में जबलपुर विश्वविद्यालय ने डी०लिट्० की मानद उपाधि प्रदान की। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री बाद में पद्मभूषण से अलंकृत किया। निधन के समय वे कालिदास अकादमी, उज्जैन के कार्यकारी अध्यक्ष थे।

सुमनजी के परिवार में उनकी पत्नी, दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ हैं।

काशी सुमनजी का ऋणी रहेगा जिनके प्रयास से पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी शांति निकेतन से काशी आये। सुमनजी के अनेक सहपाठी काशी में आज भी उनको याद करते हैं, जिनमें प्रमुख हैं—डॉ० विजयशंकर मल्ल तथा डॉ० बच्चन सिंह। सुमनजी का पहला काव्य संग्रह 'हिल्लोल' काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ था। आचार्य केशवप्रसाद मिश्र ने उसकी भूमिका लिखी थी। उन्होंने अपनी काव्यकृति 'प्रलय सृजन' काशी के सुप्रसिद्ध साम्यवादी राजनीतिज्ञ रुस्तम सैटिन को समर्पित किया था। केदारनाथ सिंह के शब्दों में—शून्य में विलीन हो गया एक अलिखित कोश।

सुमनजी के निधन से हिन्दी जगत की अपूरणीय क्षति है। उनकी ओजपूर्ण वाणी आज भी मन-मस्तक में गूँज रही है—

कुछ मस्तक कम पड़ते होंगे
जब महाकाल की माला में;
माँ माँग रही हो आहुति
जब स्वतंत्रता की ज्वाला में।
पल भर भी पड़ असमंजस में,
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

सुमनजी चले गये और कह गये—

हम भला बुरा सब जीवन का सब
आज यहीं हम छोड़ चले।

— पुरुषोत्तमदास मोदी

भारतभूषण अग्रवाल की पत्नी बिन्दु अग्रवाल का निधन

हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका **बिन्दु अग्रवाल** का 18 नवम्बर 2002 को दिल्ली में निधन हो गया। वे 75 वर्ष की थी। उनके परिवार में एक पुत्र और एक पुत्री हैं। श्रीमती अग्रवाल पिछले कुछ दिनों से बीमार चल रही थीं। गुर्दा फेल होने के कारण अस्पताल में उनका निधन हो गया। 19 जुलाई 1928 को आगरा में जन्म श्रीमती अग्रवाल ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम०ए० किया था और 1960 में प्रयाग विश्वविद्यालय से डी०फिल०। 1960 से 1988 तक वे लेडी श्रीराम कालेज में हिन्दी की वरिष्ठ प्राध्यापक थीं और दो दशकों से पति की स्मृति में भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार का संयोजन करती थीं। उनके निधन से भारतभूषण अग्रवाल की स्मृति भी शेष हो गयी।

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी रामविनायक सिंह नहीं रहे

डीजल रेल इंजन कारखाना के 1985 में सेवानिवृत्त वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी का 15 नवम्बर 2002 को सरसुन्दरलाल अस्पताल में निधन हो गया। उनका जन्म वाराणसी जिले के लच्छिरामपुर, अनेई में 1925 ई० में हुआ था। हिन्दी अध्यापक के रूप में विभिन्न डिग्री कालेजों में अध्यापन करते हुए 1955 में पूर्वोत्तर रेलवे में अनुवादक पद नियुक्त हुए थे। उन्होंने कविता, कहानी, संस्मरण, उपन्यास सभी विधाओं में रचना की। 'सरकारी कामकाज में हिन्दी' उनकी प्रसिद्ध पुस्तक है।

कवि सलीम राही का निधन

जाने-माने कवि नाटककार व आकाशवाणी, ओबरा के कार्यक्रम प्रभारी **मो० सलीम राही** का 52 वर्ष की अवस्था में 22 नवम्बर 2002 को ओबरा में निधन हो गया। वे पिछले 3-4 दिनों से मलेरिया रोग से पीड़ित थे। श्री राही अपने पीछे पत्नी के अलावा दो पुत्र व तीन पुत्रियों का शोक संतप्त परिवार छोड़ गये हैं। उनकी रेडियो यात्रा आकाशवाणी, वाराणसी से प्रसारित होने वाले युववाणी कार्यक्रम से शुरू हुई। सन् 1982 में वे सूरतगढ़ (राजस्थान) केन्द्र में उद्घोषक के रूप में चुने गये। उनकी कार्यकुशलता व कठिन परिश्रम को देखते हुए उन्हें सन् 1988 में पोर्टब्लेयर केन्द्र में कार्यक्रम अधिशासी बनाया गया। इसके दो वर्ष बाद श्री राही पुन: वाराणसी केन्द्र पर नियुक्त किये गये। सरल व सहज स्वभाव के कारण वे जहाँ जाते थे, वहाँ अपनी अलग पहचान छोड़ते जाते थे। उन्हें दो बार कार्यक्रम निर्माण के लिए आकाशीवाणी ने राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। वे ओबरा केन्द्र से प्रसारित रेडियो धारावाहिक 'उजाला' का निर्देशन भी किया था।

सलीम राही का यूँ जाना कितना दु:खद है। वाराणसी में उन्होंने हमारी कितनी वार्ताएँ आकाशवाणी पर कराईं। कुछ वर्ष पूर्व वाराणसी से ओबरा स्थानान्तरण होने पर वे मेरे पास आए, बोले मुझे ओबरा जाने का आदेश हुआ है, मेरे बच्चों की परीक्षा मार्च में है यदि मुझे अप्रैल में जाने की अनुमति मिल जाती तो बच्चों की परीक्षा करवा लेता। आकाशवाणी के तत्कालीन निदेशक मेरे मित्र थे, उनको फोन किया और उनको मनचाही मुराद मिल गई। एक दिन आभार जताने आये, अब किसे कहूँ उसे मत जाने दो, प्यारा सलीम राही अनजानी राह चला गया। **— पुरुषोत्तमदास मोदी**

प्रो० पारसनाथ द्विवेदी

राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित संस्कृत विद्वान् **प्रो० पारसनाथ द्विवेदी** का 1 दिसम्बर 2002 को उनके गायत्री नगर स्थित आवास पर निधन हो गया। वे 74 वर्ष के थे। प्रो० द्विवेदी सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पुराण इतिहास विभाग और छात्र कल्याण संकाय के अध्यक्ष रहे। विगत अगस्त माह में उन्हें राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त हुआ था। उन्हें इसके पूर्व संस्कृत संस्थाओं से अनेक सम्मान प्राप्त हुए थे। द्विवेदीजी के लगभग 50 ग्रन्थ प्रकाशित हैं। उनके निधन से संस्कृत साहित्य के रचनाकार का स्थान रिक्त हो गया।

साहित्य, कला, संस्कृति

इस समय समाज के सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं वे दलितों और स्त्रियों को लेकर हैं। आज सामाजिक विसंगति के क्षेत्र में सबसे प्रखर प्रश्न दलितों और स्त्रियों की स्थिति को लेकर आ रहे हैं। जो लेखक इन सामाजिक सरोकारों के प्रति सचेत हैं वे उन्हें अपनी रचना का भी मुद्दा बनाएँ।

मैं यह नहीं मानता कि अनुभव की प्रामाणिकता केवल लेखक के व्यक्तिगत अनुभव पर ही आधारित हो सकती है। मुख्य प्रश्न संवेदना का है। संवेदन शून्य व्यक्ति के लिए निजी तौर पर अर्जित किये गये तीखे अनुभवों का भी कोई महत्त्व नहीं है।

नारी मुक्ति को लेकर लिखा गया अधिकांश कथा साहित्य व्यावसायिक क्षेत्र में पुरुष से प्रतिस्पर्धा और उसकी ईर्ष्या, पारम्परिक विवाह प्रथा का खंडन, प्रत्याख्यान, यौन शुचिता की अवधारणा का प्रत्याख्यान, दहेज प्रथा की विकरालता आदि जैसे अलग-अलग मुद्दों पर ही केन्द्रित होकर रह जाता है। भारतीय समाज में समग्र रूप से नारी की स्थिति का नक्शा हमारा साहित्य भी देते-देते उसी तरह चूक जाता है, जिस तरह इस दिशा में पूरे समाज को राजनीति का चिंतन चूक रहा है।

— श्रीलाल शुक्ल

❑ ❑ ❑

धर्म के विखण्डन का नारा खतरनाक है। साम्प्रदायिकता के मनोविज्ञान को समझने की जरूरत है। घृणाविहीन समाज की रचना के लिए संवाद जरूरी है, लेकिन उसके लिए सामने वाले के धरातल पर जाना होगा। बातों को संदर्भ से काट कर अपने फायदे के लिए इस्तेमाल की प्रवृत्ति छोड़नी होगी। साहित्यकार को एक्टिविस्ट बनाने की वकालत करने वालों को साहित्यकार अगर बन्दूक लेकर चौराहे पर खड़ा हो जाएगा तो वैचारिक स्तर पर कमजोर हो जाएगा। **— गिरिराज किशोर**

❑ ❑ ❑

गाँवों से नगरों की ओर ग्रामीणों का पलायन तभी रोका जा सकता है जब गाँवों की लोक संस्कृति सुरक्षित रहे तथा रोजगार के साथ ही शिक्षा, कृषि उद्योगों की उपलब्धता रहे।

विदेशों में लोग लोक का अर्थ फोक से लगाते हैं। वहाँ फोक कार्यक्रमों को स्तरीय नहीं माना जाता है। अपने यहाँ लोक अर्थ आलोक से है।

आलोक में आधारभूत संस्कृति निहित है। नगर में बढ़ते हुए व्यवसायीकरण के कारण नागरिकों में अहंकार बढ़ जाता है और वे गाँव वालों को गँवार तथा जंगल में रहने वालो को जंगली कहते हैं। वे एकाकी एवं स्वार्थी होते हैं जबकि गाँव में भाईचारा है, आत्मीयता है। लोग एक दूसरे के दुख सुख में शामिल रहते हैं।

लोक संस्कृति के अन्तर्गत रामलीला, रासलीला एवं लोकगीतों के माध्यम से आत्मीयता का सन्देश फैलता है। अंग्रेजी ने गाँव को शहरों से काट दिया है और फिल्मी गीतों का प्रचलन बढ़ गया है। पहले फिल्मी गीत इल्मी हुआ करते थे। अब उनमें से इल्म गायब हो चुकी है। मौलिकता का अर्थ अपने से लगाया जाता है जबकि मौलिकता का अर्थ मूल से जुड़ना है। प्रयोजनार्थ लीलाओं में संस्कार एवं पारम्परिक मूल्यों से जुड़ी भावनाएँ होती हैं।

— आचार्य विष्णुकांत शास्त्री

❑ ❑ ❑

संत की पुस्तक, सरकार की मुसीबत

मध्य प्रदेश विधानसभा में भाजपा द्वारा उत्तर प्रदेश के एक अधिकारी के०एम० संत द्वारा लिखित पुस्तक में राम और सीता के बारे में आपत्तिजनक बातों को लेकर हंगामा उत्तर प्रदेश की बसपा और भाजपा गठबंधन सरकार के लिए मुसीबत बन गया है। श्री संत ने सरकारी सेवा में रहते हुए भाजपा शासन में इस तरह की आठ किताबें लिखी हैं। वह गत जुलाई में आईएएस से रिटायर हुए हैं और इस समय राज्य लोक सेवा अधिकरण में प्रशासनिक पद पर हैं। मध्य प्रदेश विधानसभा में विपक्ष के हंगामे के कारण वहाँ के कांग्रेसी मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह धर्मसंकट में फँस गये। उनके सचिव ने उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव से श्री संत के बारे में जानकारी माँगी कि सरकारी सेवा में रहते हुए उन्होंने ऐसी पुस्तकें कैसे लिखीं।

❑ ❑ ❑

लिखनेवाले ही उसे कविता कहते हैं और इन कवियों के कुछ मित्र भी उसे कविता मानते हैं। हालांकि वह कविता केवल कवियों के काम की है। कविता के नाम पर सिर्फ तमाशा है। जो कविता महज थोड़े से पढ़े-लिखे लोगों तक रह जाय वह कैसी कविता हुई। कविता में में मोटे तौर पर छन्द जरूरी है। पर छन्द छोड़ भी दें तो लय में रहना होगा। निराला छन्द छोड़ते हैं पर लय नहीं। लय ही मूल है। इसका बोध सीमित हुआ तो कविता अर्थ खोलती है। **— त्रिलोचन**

कवि ओंकारनाथ नहीं रहे

हिन्दी के मूर्धन्य कवि और प्रख्यात प्रसारक **ओंकारनाथ श्रीवास्तव** (70) का आज 29 नवम्बर 2002 को लन्दन में लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। जनवरी 1932 में उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले में जन्म श्रीवास्तव तीस वर्ष तक बीबीसी की हिन्दी सेवा से जुड़े रहे थे और अपनी बेहतरीन शैली के दम पर उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई।

शीघ्र प्रकाश्य

वट वृक्ष की छाया में

कुमुद नागर

कुमुद नागर की 'वट वृक्ष की छाया में' एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। एक ओर यह नागर परिवार की चार पीढ़ियों की गाथा है, दूसरी ओर उनके पिता श्री अमृतलाल नागर की जीवन कथा, जो कुमुदजी ने एक भावुक पुत्र की भाँति नहीं बल्कि एक संवेदनशील कलाकार की हैसियत से लिखी है। उसी के साथ इसमें उनके निजी संस्मरण और आत्मकथात्मक दीप्तियाँ हैं। अपने आप में यह अत्यन्त रोचक और कहीं-कहीं बहुत विचलित करने वाला लेखन है; खासतौर पर वह पक्ष जो परम प्रतिभाशील रचनाकारों और कलाकारों के तनाव और संघष को उजागर करता है। इसे पिता अमृतलाल नागर और पुत्र कुमुद नागर—दोनों के सन्दर्भ में देखा जा सकता है।

हिन्दी के सामान्य पाठक के लिये तो यह पुस्तक बहुमूल्य सिद्ध होगी ही, साहित्य के गम्भीर विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिये यह ऐसी सामग्री सम्पन्न है जो कहीं दूसरी जगह उपलब्ध नहीं। मैंने स्वयं साहित्य अकादमी के लिये श्री अमृतलाल नागर की संक्षिप्त जीवनी लिखी है (ओर इस बात को लेकर संतुष्ट हूँ कि तथ्यों के स्तर पर मेरी जीवनी और इस पुस्तक के वृत्तांतों में कोई भेद नहीं है), पर इस कृति में नागरजी के 'छड़ी प्रेम' का जैसा रुचिर वृत्तांत मिलता, 'नाजुक महल' नामक छड़ी के लिये नागरजी की आसक्ति का जैसा चित्र उभरा, वह संस्मरण साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उसकी रचना कुमुद नागर ही कर सकते थे।

इस विशिष्ट कृति के लिये कुमुद नागर हम सब की बधाई के पात्र हैं—धन्यवाद के भी। निश्चय ही साहित्य जगत में इसका खुले मन से स्वागत होगा।

बी-2251, इन्दिरा नगर **श्रीलाल शुक्ल**
लखनऊ-226016

अनुक्रम

साईं इतना दीजिये, पुनि जहाज पै आयो, बड़े चाचाजी, स्वप्नभंग, मदन चाचाजी, अपनी तलाश, राम रचि राखा, बा पचहत्तर प्रतिशत अमृतलाल नागर, किस्सागो, तमाशा मैं खुद हूँ और तमाशाई भी खुद हूँ, तमाशा और तमाशाई, रंगकर्मी, रेडियो शिल्पी, दीवाने ख़ास : दिल्ली, वटवृक्ष।

धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद

सम्पादक

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा
वसुंधरा मिश्र

सजिल्द 320 पृष्ठ मूल्य : 250.00

आपका पत्र

बी-151 महाराणा प्रताप एन्क्लेव
पीतमपुरा, दिल्ली-34

22.11.02

प्रिय भाई,

'भारतीय वाङ्मय' का नवम्बर अंक मिला। हजारीप्रसाद द्विवेदी के स्वभाव के अनुरूप ही हैं। मैं भी इसी तरह के विनोद का शिकार हो चुका हूँ, फिर कभी लिख भेजूँगा। उस समय पंडितजी पंजाब विश्वविद्यालय में थे और मैं वहाँ किसी समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में गया था।

'इतिहास का सच' के अन्तर्गत कई प्रश्न उठाये हैं आपने। वास्तव में इतिहास को विकृत करने का प्रश्न कहीं नहीं है। हम निश्चित रूप से सत्य का पता नहीं लगा पाये हैं, बड़ा लम्बा दौर है। प्रश्न पूर्वाग्रह से मुक्त होकर सत्य की खोज करना है। हमलोग आर्य संस्कृति की प्रशंसा करते नहीं अघाते। मैंने भी बहुत की है, लेकिन भाई जिस देश में जनसंख्या के बहुत बड़े को अछूत कर तिरस्कृत किया जाता रहा हो और नारी को माँ के पद पर प्रतिष्ठित करके फिर उसे निरन्तर अपमानित किया जाता रहा हो, उस संस्कृति को आप क्या कहेंगे? बड़ा उलझा हुआ प्रश्न है। इस समय हमारी राजनीति पर छाया हुआ। कहाँ जा रहे हैं हम? यही हम नहीं जानते हैं और बात करते महिमा मंडित संस्कृति की। खैर फिर कभी बात करेंगे?

सस्नेह,

आपका
विष्णु प्रभाकर

❑ ❑ ❑

आप द्वारा सम्पादित 'भारतीय वाङ्मय' के पिछले अंक में 'इतिहास का सच' शीर्षक टिप्पणी पढ़ी। वस्तुत: 'इतिहास के सच' का प्रश्न 'इतिहास की वस्तुनिष्ठता' का प्रश्न है। आपने अपनी टिप्पणी में प्रकारान्तर से इसी प्रश्न को उठाया है। टिप्पणी सामयिक और विचारोत्तेजक है। 'भारतीय वाङ्मय' में इस प्रकार की टिप्पणियाँ बराबर निकलनी चाहिए। 'इतिहास' को तो आज नकारा जा रहा है। किन्तु नकारने वाले भूल जाते हैं कि मनुष्य का सारा चिन्तन देश-कालबद्ध है। काल के अतिक्रमण का अर्थ होगा उस महाशून्य में प्रवेश जहाँ 'न सत् है न असत्'। व्यक्त जगत् का निवासी मनुष्य वहाँ प्रवेश नहीं कर सकता। उसकी कल्पना भले कर ले।

'इतिहास के सच' के समान ही 'साहित्य के सच' का प्रश्न भी महत्वपूर्ण और गम्भीर विचार की अपेक्षा रखता है। जब-जब साहित्य को 'संघबद्ध' करने की कोशिश की गई है उसने अपनी रचनात्मकता खोई है और उसकी अर्थ-भूमि संकीर्ण हुई है। साहित्य का जगत् सम्भावना का जगत् है। सम्भावना को यथार्थ से प्रेरणा और उत्तेजना तो मिल सकती है किन्तु यथार्थ उसकी सीमा नहीं बन सकता। आज जब 'इतिहास' को नकारा जा रहा है तो उसके 'स्वरूप' उसके 'दर्शन', उसकी 'सच्चाई' और उसकी 'वस्तुनिष्ठता' तथा उसकी 'निरन्तरता' एवं 'पुनर्नवता' के प्रश्नों पर गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है।

'भारतीय वाङ्मय' में अन्य भाषाओं (भारतीय) में प्रकाशित होने वाली पुस्तकों का प्रकाशन की सूचना भी दें।

डॉ० रामचन्द्र तिवारी
पूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
गोरखपुर विश्वविद्यालय

❑ ❑ ❑

'भारतीय वाङ्मय' का नवम्बर 2002 का अंक मिला। इतिहास का प्रदूषण लोगों द्वारा खास मकसद से किया गया है और वह मकसद है, धर्म निरपेक्षता की भ्रान्त परिभाषा की आड़ में भारतीयता के उदार तत्त्वों को नकारना जो साम्प्रदायिकता, संकीर्णता, असहिष्णुता और अलगाववाद के विरुद्ध रक्षा-कवच थे।

डॉ० रामसेवक शुक्ल
इलाहाबाद

❑ ❑ ❑

देश की राजनीति का निम्न स्तर

नवम्बर अंक में 'इतिहास का सच' पढ़कर प्रेरणा हुई, इसलिए लिख रहा हूँ। एन०सी०ई० आर०टी० की पुस्तकों को लेकर राजनीतिक विवाद कितनी प्रखरता पर है—पुस्तक में गाँधीजी के हत्यारे हिन्दू महासभायी नाथूराम गोडसे का नाम क्यों नहीं छपा।

वह दिन दूर नहीं जब राजनीति इस स्तर पर उतर आयेगी जब पं० जवाहरलाल नेहरू को कश्मीर, तिब्बत और चीन के मामले में कठघरे में खड़ा किया जायगा। इतिहास पुस्तकों में राजीव गाँधी को बोफोर्स तोपों में घूसखोरी करना लिखा जायगा। क्या कोई भी राजनीतिक पार्टी अपने आचरण में पाक साफ है? इतिहास की गन्दगी को कुरेदिए मत, गन्दगी को ढकी रहने दीजिए ताकि आने वाली पीढ़ी उस गन्दगी में अपने को शामिल करने की प्रेरणा न ले सके। **— एक पाठक**

❑ ❑ ❑

आप लोगों द्वारा प्रेषित साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की अक्टूबर माह की 'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका पढ़कर बड़ा ही अच्छा लगा।

वास्तव में आप लोगों द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका साहित्यिक, सांस्कृतिक समाचारों का अनूठा संग्रह है। **—डॉ० एम०के० गुप्ता**

❑ ❑ ❑

आपने इस छोटी-सी पत्रिका में गागर में सागर भर दिया है। आपकी इस लघु पत्रिका से हम बहुत प्रभावित हुए। आपकी पत्रिका के अक्टूबर अंक में आपका सम्पादकीय 'करहु विलम्ब न भ्रात अब' बहुत ही सटीक लगा। **— कृष्णचन्द्र टवाणी**

❑ ❑ ❑

'भारतीय वाङ्मय' का नवम्बर 2002 का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद और आपके सशक्त एवं सामयिक सम्पादकीय 'इतिहास का सच' के लिये साधुवाद। साथ ही एक अनुरोध कि कृपया इस प्रश्न पर बहस जारी रखें, जिससे वामपंथी इतिहासकारों द्वारा किये जा रहे कुत्सित प्रचार का प्रतिकार किया जा सके।

'भारतीय वाङ्मय' बुलेटिन के आकार में होते हुये भी, इससे सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका का आनन्द मिलता है। आपको पुन: साधुवाद व बधाई।

राधेश्याम धूत
धूत हाउस, अशोक मार्ग
जयपुर

प्राप्ति स्वीकार

खोई हुई लड़की का खत (कहानी)
जीवन लता पूर्वे 50.00

मनरौं मनका (अंगिका कविता संग्रह)
चन्द्रप्रकाश जगप्रिय 50.00

केकरों का चाँद केन्हौं चाँद
(अंगिका कविता संग्रह) *जीवन लता पूर्वे* 50.00
प्रकाशक :
अंगिका संसद, भीखनपुर, भागलपुर

नया हस्तक्षेप *सं० : आभा पूर्वे*
शरतचन्द पथ, मशाक चक, भागलपुर

अभिनव कदम का राही मासूम रज़ा
केन्द्रित विशेषांक, राही मासूम रज़ा के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अनेक लेखकों के साक्षात्कार, मूल्यांकन तथा अन्य महत्त्वपूर्ण सामग्री
मूल्य : 60.00
प्रकाशक
साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था **मंथन**
223 प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड
निजामुद्दीनपुरा
मऊनाथभंजन (मऊ) 257131

गुजरात से प्रकाशित कविता संग्रह

लय नहीं टूटी

(गीत संग्रह)

रमेशचन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

87 गीतों का यह गीत संग्रह पुस्तक के नाम को सार्थक करता प्रतीत होता है। एक लय के ये गीत कवि के परिवेश की संवेदना को व्यक्त करते हैं। नई कविता के युग में ये गीत मर्म को स्पर्श करते हैं।

मूल्य : 52.00
प्रकाशक : **मनोरमा शर्मा**
डी-4, उदय हाउसिंग सोसायटी
बैजलपुर, अहमदाबाद

आगामी प्रकाशन

एक विश्व : एक संस्कृति

पं० व्रजवल्लभ द्विवेदी

आज के विश्व में परस्पर विरोधी और अविरोधी अनेक धर्म प्रचलित हैं। इनमें धर्मवायु की प्रधानता रहते हुए भी आध्यात्मिक तत्त्वों की कमी नहीं है। कर्मकाण्ड के धरातल पर इनमें परस्पर विरोध दिखाई देने पर भी इनकी आध्यात्मिक दृष्टि में बहुत समानता है। इसके आधार पर इनमें परस्पर सामंजस्य बैठाया जा सकता है। भारत में ऐसा हुआ भी है। प्रसिद्ध भारतीय ज्योतिर्विद् वराहमिहिर ने आज से डेढ़ हजार वर्ष पूर्व एक ही श्लोक में इसका अच्छा समाधान दिया है कि व्यक्ति जिस किसी भी देवता की उपासना, उस देवता के द्वारा बताई गई पद्धति से ही करें। पंचायतन और षडायतन पद्धति से भारत में तो यह भी हुआ है कि व्यक्ति अपने इष्टदेव की प्रधान रूप से उपासना करता हुआ, अन्य सम्प्रदायों के देवताओं की उपासना भी उन-उन शास्त्रों में प्रदर्शित विधि से कर सकता है। आज के विश्व में अन्य धर्मों के साथ इस्लाम और ख्रीस्ट धर्म का सामंजस्य अभी नहीं बैठ पाया है। वराह मिहिर की पद्धति से इनमें परस्पर सौहार्द बने, आज यह **एक विश्व** की कल्पना की प्रथम आवश्यकता है।

> ''धर्माध्यक्षों के मायाजाल से मुक्त भारतीय प्रशासन एक समग्र भारतीय संस्कृति के माध्यम से धार्मिक आतंकवाद से मुक्त हो सकता है, जिससे भारत में बसने वाले सभी धर्मों के अनुयायी परस्पर अविरोधी अपने-अपने धार्मिक कार्यकलापों को चलाते हुए भी सभी धर्मों के प्रति समादर की भावना को जगा सकें।'' — **एक विश्व : एक संस्कृति**

अध्यातन भीतर झाँकता है, वह बाहर नहीं देखता। इसके विपरीत आधुनिक भौतिक विज्ञान केवल बाहरी दुनिया देखता है, मनुष्य की आन्तरिक प्रवृत्तियों पर वह ध्यान नहीं देता। मनोविज्ञान के आधार पर अध्यात्म में और भौतिक विज्ञान में भी परस्पर सामंजस्य स्थापित हो, इस विषय पर पूरे विश्व के विज्ञ को विचार करना चाहिए। तभी विज्ञान द्वारा पैदा की गई अणुबम की विभीषिका से मानवजाति मुक्त हो सकेगी। अध्यात्म और विज्ञान के इस तरह के समन्वय के बाद ही **एक संस्कृति** का निर्माण सम्भव हो सकता है।

यह ग्रन्थ पाँच अधिकारों में विभक्त है। प्रथम अधिकार में संस्कृति के साधक-बाधक तत्त्वों का, द्वितीय अधिकार में धर्म और संस्कृति के स्वरूप और इनके परस्पर अन्तर का, तृतीय में तन्यामीय दर्शन और चतुर्थ में तन्मात्मीय साहित्य का परिचय दिया गया है। अन्तिम अधिकार इस ग्रन्थ का प्राण है। यहाँ समता दृष्टि, विश्व संस्कृति, विश्व दृष्टि और विश्व व्यवहार जैसे विषय विवेचित हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि विश्व में सामूहिक नेतृत्व और संभूष समुत्पात की भावना प्रतिष्ठित हो।

आचार्य व्रजवल्लभ द्विवेदीजी की मूलगामी अध्यात्म उपासना एवं आजीवन सांस्कृतिक साधना के सार स्वरूप यह ग्रन्थ न केवल सुज्ञ जिज्ञासु के लिये ही उपयोगी है, किन्तु मानवीय उत्थान हेतु कटिबद्ध सब कर्मठ क्रियाशीलों के लिये भी इसकी एक अनुपम मार्गदर्शिका के रूप में बड़ी उपयुक्तता है।

नवीनतम प्रकाशन

इतिहास-संस्कृति-कला

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क *डॉ० आर० गणेशन्* 400.00
महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त* 300.00
प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु *डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 650.00
Daishik Shastra *Badri Shah Thuldharia* 150.00
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र* 650.00

अध्यात्म, योग, तंत्र साधना

सृष्टि और उसका प्रयोजन (मेहेर बाबा) *शिवेन्द्र सहाय* 65.00
यजुर्वेदीय सन्ध्या-तर्पण-विधि *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 30.00
बृहत श्लोक संग्रह (सर्वधर्म समभाव) *सम्पादक : प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 200.00
गङ्गा : पावन गङ्गा *डॉ० शुकदेव सिंह* 25.00
जपसूत्रम (भाग-1) *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 150.00
पूर्वांचल के संत-महात्मा *सं० : परागकुमार मोदी* 70.00
स्वामी दयानन्द जीवनगाथा *डॉ० भवानीलाल भारतीय* 120.00
सनातन हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म *श्यामसुन्दर उपाध्याय* 75.00

साहित्य-समीक्षा

फणीश्वरनाथ रेणु और उनका कथा साहित्य *डॉ० रागिनी वर्मा* 320.00
अक्षर बीज की हरियाली *डॉ० वेदप्रकाश अमिताभ* 180.00
धर्म, दर्शन और विज्ञान में रहस्यवाद *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा, वसुंधरा मिश्र* 250.00
भवानीप्रसाद मिश्र और उनका काव्य संसार *डॉ० अनुपम मिश्र*
'स्वदेश' की साहित्य-चेतना *डॉ० प्रत्यूष दुबे*
प्रसाद स्मृति वातायन *सं० : पुरुषोत्तमदास मोदी* 150.00
क्रांतिकारी कवि निराला (संशोधित परिवर्धित) *डॉ० बच्चन सिंह* 120.00
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ *डॉ० रामकली सर्राफ* 120.00

भोजपुरी साहित्य

भोजपुरी लोक साहित्य *डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय* 400.00
बदमाश दर्पण (तेग़ अली) *सं० : श्री नारायणदास* 60.00
पुरइन पात (पाठ्य ग्रन्थ) *सं० : डॉ० अरुणेश 'नीरन', चितरंजन मिश्र* 80.00
पुरइन पात (भोजपुरी साहित्य संचयन) '' 200.00
चुनल गीत *सं० : कृपाशंकर शुक्ल* 80.00

साहित्यिक निबन्ध

त्रिवेणी *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, सं० डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 30.00
चिन्तामणि '' 40.00
निबन्ध संकलन *डॉ० रामकली सराफ* 40.00

भाषाशास्त्र

A Comparative Study of Bhojpuri & Bengali *Dr. Shruti Pandey*

उपन्यास

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य *युगेश्वर* 140.00
चरित्रहीन *आबिद सुरती* 180.00

कहानी

प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियाँ *सं० डॉ० कुमार पंकज* 80.00
प्रश्नचिन्ह तथा अन्य कहानियाँ *अनीता पण्डा* 80.00

नाटक

मांदर बज उठा (रेडियो नाटक संकलन) *अनिन्दिता* 150.00

काव्य

कहकशाँ (शायरी) *हशम तुराबी* 50.00
प्रसाद की चतुर्दशपदियाँ *सं० : डॉ० किशोरीलाल गुप्त* 50.00
धूमिल की कविताएँ *सं० : डॉ० शुकदेव सिंह* 80.00
कृष्णायन *रामबदन राय* 200.00
राष्ट्रप्रेम के गीत *सं० : कृपाशंकर शुक्ल* 150.00

संस्मरण, जीवनचरित

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' *सं० : पुरुषोत्तमदास मोदी* 150.00

संस्कृत साहित्य

संस्कृत के प्रतीकात्मक नाटक *डॉ० आशारानी त्रिपाठी* 225.00

पत्रकारिता

The Rise And Growth of Hindi Journalism *Dr. R.R. Bhatnagar, Ed. by Dr. Dhirendra Singh* 800.00
हिन्दी पत्रकारिता का नया स्वरूप *बच्चन सिंह, पत्रकार* 250.00

अभिनय कला, भाषण, वार्ता

बोलने की कला *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250.00

समाजशास्त्र

समाजदर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीशसहाय वर्मा* 150.00

अर्थशास्त्र एवं वाणिज्य

भारतीय सामाजिक एवं आर्थिक चिन्तन *कृष्णकुमार सोमानी* 75.00

SCIENCE

Indian Artificial Satelite *Dr. S.N. Ghosh* 250.00

नये प्रकाशन

चुने हुए उपन्यास

परछाईं नाच	*प्रियंवद*	120.00
भटको नहीं धनंजय	*पद्मा सचदेव*	75.00
पंचनामा	*वीरेन्द्र जैन*	140.00
श्रम एव जयते	*जयनन्दन*	50.00
शतरंज के मोहरे	*अमृतलाल नागर*	185.00
गुनाहों का देवता	*धर्मवीर भारती*	100.00
कहाँ जा रहे हैं हम	*अखिलन*	160.00
छिन्नमस्ता	*इन्दिरा गोस्वामी*	125.00
युगन्धर	*शिवाजी सावन्त*	500.00
प्रतिघात	*नागनाथ इनामदार*	250.00
अविनश्वर	*आशापूर्णा देवी*	80.00
रेत की इक्क मुट्ठी	*गुरदयाल सिंह*	85.00
गुड़िया का घर	*जीलानी बानो*	85.00
मैं तो ठहरा हमाल	*अप्पा कोरपे*	85.00
आदिभूमि	*प्रतिभा राय*	250.00
महानायक	*विश्वास पाटील*	365.00
लीला चिरन्तन	*आशापूर्णा देवी*	100.00
राजा पोखरे में कितनी मछलियाँ	*प्रभासकुमार चौधरी*	95.00
मास्टर साब	*महाश्वेता देवी*	85.00
चाँदनी बेगम	*क़ुरअतुलऐन हैदर*	160.00
भव	*यू०आर० अनन्तमूर्ति*	80.00
नटरंग	*आनन्द यादव*	110.00
उत्तरसन्धान	*सुनील गंगोपाध्याय*	110.00
शोधयात्रा	*अरुण साधु*	175.00
न जाने कहाँ-कहाँ	*आशापूर्णा देवी*	100.00
शाहंशाह	*नागनाथ इनामदार*	280.00
मत्स्यगन्धा	*होमेन बरगोहाईं*	45.00
दृश्य से दृश्यान्तर	*आशापूर्णा देवी*	140.00
उत्तरमार्ग	*प्रतिभा राय*	140.00
प्रारब्ध	*आशापूर्णा देवी*	120.00
पाखी घोड़ा	*वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य*	125.00
छावा	*शिवाजी सावन्त*	285.00
निशान्त के सहयात्री	*क़ुरअतुलऐन हैदर*	120.00
कोरे काग़ज	*अमृता प्रीतम*	70.00
मृत्युंजय	*वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य*	85.00
शब्दों के पींजरे में	*असीम राय*	28.00
स्वामी	*रणजित देसाई*	110.00
सुवर्णलता	*आशापूर्णा देवी*	180.00
बकुलकथा	*आशापूर्णा देवी*	150.00
माटीमटाल	*गोपीनाथ महान्ती*	300.00
मृत्युंजय	*शिवाजी सावन्त*	300.00
सहस्त्रफण	*विश्वनाथ सत्यनारायण*	280.00
हँसली बाँक की उपकथा	*ताराशंकर बन्द्योपाध्याय*	150.00
गणदेवता	*ताराशंकर बन्द्योपाध्याय*	250.00
चन्द्रा	*उपेन्द्रनाथ अश्क*	150.00
गूँजते स्वर	*प्रतिभा जौहरी*	150.00
बहता हुआ पानी	*राजेन्द्र अवस्थी*	200.00
एक ज़मीन अपनी	*चित्रा मुद्गल*	250.00
यमदीप	*नीरजा माधव*	250.00
कुतो पंथाः	*रमा सिंह*	250.00
वक्त चलता है	*विजय श्रीवास्तव*	150.00
भागवत घर	*प्रफुल्ल महांति*	150.00
नाम न दो नदी को	*प्रेम कासलीवाल*	100.00
बागडोर	*गुरदीप खुराना*	250.00

कहानी

चंद्रभागा	*राजेन्द्रप्रसाद मिश्र*	200.00
टोबा टेकसिंह	*मंटो*	150.00
हतक	*सआदत हसन मंटो*	150.00
मंटो की तीस कहानियाँ		250.00
गोस्टा तथा अन्य कहानियाँ	*राजनारायण बोहरे*	100.00
खेलणपुर तथा अन्य कहानियाँ	*मुकेश वर्मा*	125.00
घोड़ा बाजार	*विजय*	150.00
संजीवनी बूटी	*निर्मला सिंह*	200.00
बचपन	*मधुसूदन आनन्द*	150.00
गिलिगडु	*चित्रा मुद्गल*	150.00

काव्य

शब्दों से नाता अटूट है	*नीलाभ*	60.00
साँसों की सरगम	*आमिल*	95.00
साठ गीत रत्न	*डॉ० हरिवंशराय बच्चन*	150.00
मिलने पर बताऊँगा	*प्रसन्न पाटशाणी*	100.00
जो बीत रहा	*राजेन्द्र शर्मा*	100.00
लीला मुखारविंद	*ऋतुराज*	100.00
पढ़ते हुए	*सुरेश सलिल*	150.00

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 3 **दिसम्बर 2002** **अंक : 12**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

के लिए

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत **रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2002**

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

✆ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vecppl@satyam.net.in